BAL BHARATI PUBLIC SCHOOL, PITAMPURA

हिंदी

DATE: 06-10-20

Greetings

Dear Students,

Hope that your online learning process fills you with energy and enthusiasm.

Here is your daily PDF lesson for today.

Subject Covered: हिंदी

TOPIC :

- मधुप - पाठ -9 जैसी हूँ मैं अच्छी हूँ
- संयुक्त व्यंजन, द्वित्व व्यंजन पुनरावृत्ति

SUBTOPIC :

- मधुप - पाठ -9 जैसी हूँ मैं अच्छी हूँ
- पठन पाठन ,अभ्यास कार्य (पृष्ठ 78,79)
- नए शब्द
- संयुक्त व्यंजन ,द्वित्व व्यंजन पुनरावृत्ति

Learning Outcomes :

- विद्यार्थी पाठ -9 जैसी हूँ मैं अच्छी हूँ कहानी का आनंदपूर्वक सस्वर पठन पाठन करने में सक्षम होंगे |
- कहानी के अंतर्गत संतोष,खुशी तथा आत्म गौरव जैसे मूल्यों का महत्व समझेंगे |
- विद्यार्थी पाठ में आए नए शब्दों के अर्थ समझते हुए शब्दावली का विस्तार करने में सक्षम होंगे |
- पाठ-9 के अभ्यास कार्य(पृष्ठ 78,79) के प्रश्नों को स्वयं करने में सक्षम होंगे |
- संयुक्त व्यंजन ,द्वित्व व्यंजन पुनरावृत्ति के अंतर्गत शब्द बनाने में सक्षम होंगे |

Instructional Aids : DAILY PDF,

CONNECTED CLASSROOMS -संयुक्त व्यंजन ,द्वित्व व्यंजन ,

Lesson development:

TASK 1: मधुप - पाठ -9 जैसी हूँ मैं अच्छी हूँ कहानी का सस्वर तथा हाव भाव सहित पठन पाठन किया जाएगा |

Where to do? हिंदी पुस्तक

TASK 2 कहानी के पठन- पाठन के पश्चात् पुस्तक में अभ्यास कार्य (पृष्ठ 78,79) किया जाएगा |

Where to do ?:हिंदी पुस्तक

TASK 3 : विद्यार्थी पाठ -9 जैसी हूँ मैं अच्छी हूँ अंतर्गत नए शब्दों का अर्थ समझते हुए हिंदी कॉपी में लिखेंगे |साथ ही उन शब्दों का अर्थ समझते हुए मौखिक रूप से उनसे वाक्य भी बनाएंगे |

Where to do ?: हिंदी अभ्यासपत्रिका (notebook)

TASK 4 : संयुक्त व्यंजन ,द्वित्व व्यंजन पुनरावृत्ति के अंतर्गत दिए गए व्यंजनों से शब्द बनाएँगे

Where to do ?: हिंदी अभ्यासपत्रिका (notebook)

😊 **NOTE:**

1. Keep revisiting the previous modules and concepts along with the new ones.

9 जैसी हूँ मैं अच्छी हूँ

पाठ-प्रवेश

हाथी दादा की सूँड़ जो हो जाए थोड़ी छोटी,
सोचो छिपकलियाँ हो जाएँ लंबी और मोटी-मोटी।
बच्चो, ये पंक्तियाँ बोलिए और इस पाठ से जानिए कि एक लकड़ी की गाड़ी कैसे
महत्व को समझती है।

एक थी लकड़ी की छोटी-सी गाड़ी। टिंकू उसे प्यार से 'बग्घी' बुलाता था।

बग्घी खींचने के लिए टिंकू ने उसमें एक लंबी-सी डोरी बाँध दी थी।

जब भी बग्घी टिंकू के नए-नए, रंग-बिरंगे और अपने-आप चलनेवाले खिलौनों को देखती थी तो उसे अपने ऊपर शरम आती थी।

"मैं क्यों पुरानी हूँ, क्यों मुझे खींचना पड़ता है, क्यों मैं चमकदार नहीं? क्या मैं उन जैसी नहीं बन सकती?" ये सब बातें अकसर उसे परेशान करती थीं।

एक रात जब सब सो रहे थे, बग्घी ने आसमान की ओर देखा। उसने मन में सोचा— "हे ईश्वर! मेरी इच्छा पूरी कर दीजिए। मुझे सुंदर और चमकदार बना दीजिए। टिंकू की बाकी गाड़ियों की तरह।"

सुबह जब बग्घी की नींद खुली तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। वह पूरी की पूरी चमकदार रंगों से रंग गई थी।

"अरे वाह!" टिंकू के सब दोस्त उसे देखकर बोले।

"देखो, टिंकू की नई गाड़ी!" सब बच्चे खींचकर बग्घी को बाहर ले गए। वे सब देर तक बग्घी के साथ खेलते रहे। तभी ज़ोर से बारिश शुरू हो गई। सब बच्चे जल्दी से अंदर भागे। लेकिन इस जल्दबाज़ी में वे बग्घी को बाहर ही भूल गए। बग्घी देर तक भीगती रही।

बग्घी ने देखा कि वह बिलकुल गीली और पुरानी-सी हो गई है। उसे बहुत दुख हुआ। रात को सोते समय उसने प्रार्थना की, "हे ईश्वर! मुझे रबड़ की बना दो, एक ऐसी गाड़ी जो बारिश में खराब न हो।"

अगले दिन सुबह बग्घी एक प्यारी-सी रबड़ की गाड़ी बन गई थी। टिंकू के सभी दोस्त मज़े में बग्घी के साथ खेले। उसका सोनू नाम का एक दोस्त थोड़ा शरारती था। उसने एक ब्लेड लिया और उसपर अपना नाम लिखने लगा। ब्लेड लगते ही बग्घी की रबड़ कटने लगी। थोड़ी देर में उसके ऊपर गहरे भद्दे निशान पड़ गए। सब बच्चे उसे छोड़कर भाग गए और बग्घी फिर रह गई अकेली।

बहुत सोच-समझकर उसने एक और इच्छा की, "हे ईश्वर! मुझे बैटरी से चलनेवाली, नई तरह की गाड़ी बना दो; सुंदर, मज़बूत और खराब न होनेवाली।"

अगले दिन फिर एक चमत्कार हुआ और बग्घी बन गई बैटरी से चलनेवाली सुंदर गाड़ी। ढेर-सी बत्तियोंवाली, जो जल-बुझ रही थी। उसके अंदर से मीठा संगीत फूट रहा था और वह खुद झूम रही थी।

बच्चों ने एक और सुंदर गाड़ी देखी तो बस उसी के साथ खेलने लगे। लगातार चलते-चलते बग्घी की बैटरी खत्म हो गई। बग्घी को अब रोना आ गया। वह पछता रही थी कि उसने ऐसी इच्छा क्यों की।

बाकी के खिलौने उससे बोले, "बग्घी, तुम तो बेकार में परेशान हो रही हो। जब तुम लकड़ी की थीं तब न तो थोड़ा भीगने से खराब होती थीं और न ही कट सकती थीं। हम सब तो थोड़े दिन में टूटकर खराब हो जाएँगे। लेकिन तुम ही टिंकू का सबसे पुराना खिलौना हो। वह तो तुम्हें वैसे ही प्यार करता था। फिर तुम क्यों बदलना चाहती हो खुद को?"

बग्घी को अब समझ में आया कि वह पहले ही अच्छी थी। अगले दिन सुबह उसने देखा वह पहले जैसी लकड़ी की बग्घी बन गई है। अब वह सच में बहुत खुश थी। टिंकू ने बग्घी को देखा तो बहुत खुश हुआ।

बग्घी बोली, "जैसी हूँ मैं अच्छी हूँ!"

—गीतिका गोयल

माइंड मैप

1. लकड़ी की एक बग्घी को अपने रंग-रूप पर शरम आती थी।
2. उसने ईश्वर से प्रार्थना की और चमकदार रंग-रूप माँगा। पर रंग बारिश ने ले लिया।
3. उसने रबड़वाली गाड़ी बनने की इच्छा की। एक बच्चे ने उसे ब्लेड से काट दिया।
4. वह बैटरीवाली गाड़ी बनी लेकिन बैटरी खतम हो गई।
5. अंत में वह समझी "जैसी हूँ मैं अच्छी हूँ।"

अभ्यास

बोलिए

1. **पढ़िए**

बग्घी, शरम, परेशान, ईश्वर, जल्दबाज़ी, प्रार्थना, ब्लेड, भद्दे, चमत्कार

2. **बताइए**

क. टिंकू की गाड़ी किससे बनी थी?

ख. टिंकू अपनी गाड़ी को प्यार से क्या कहकर बुलाता था?

ग. गाड़ी खुद को बदलना क्यों चाहती थी?

3. **सोचिए/मूल्यपरक प्रश्न**

अंत में बग्घी ने कहा कि "जैसी हूँ मैं अच्छी हूँ!" आपमें कौन-कौन सी अच्छी बातें हैं? चुनकर बताइए—

- हमेशा खुश रहना
- सबकी मदद करना
- किसी की शिकायत नहीं करना
- हमेशा उदास रहना

लिखिए

1. **सही उत्तर पर ✓ का निशान लगाइए और लिखिए—**

क. बग्घी .... रंगों से रंग गई।

☐ भद्दे ☐ चमकदार ☐ नीले ☐ हलके

ख. टिंकू के दोस्त ने बग्घी पर .... से अपना नाम लिखने की कोशिश की।

☐ पेंसिल ☐ रंग ☐ चाकू ☐ ब्लेड

2. **पाठांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए—**

"अरे वाह!" टिंकू के सब दोस्त उसे देखकर बोले। "देखो, टिंकू की नई गाड़ी!" सब बच्चे खींचकर बग्घी को बाहर ले गए। वे सब देर तक बग्घी के साथ खेलते रहे। तभी ज़ोर से बारिश शुरू हो गई। सब बच्चे जल्दी से अंदर भागे। लेकिन इस जल्दबाज़ी में वे बग्घी को बाहर ही भूल गए। बग्घी देर तक भीगती रही।

क. टिंकू की नई गाड़ी को देखकर बच्चों ने क्या कहा?

....

ख. बच्चे जल्दी से अंदर क्यों भागे?

....

ग. वाक्य पूरा कीजिए—

बग्घी देर तक ....।

कुछ शब्दों में उत्तर लिखिए—

क. टिंकू बग्घी को कैसे चलाता था?

....

ख. भीगने पर बग्घी कैसी हो गई?

....

ग. ब्लेड लगते ही बग्घी के साथ क्या हुआ?

....